21-8-68 ओम शान्ति: प्रात: क्लास

बेहद के बच्चों को बेहद का बाप समझाते है। लौकिक बाप तो ऐसे नही कहेंगे। उनको तो कई 5-7 बच्चे होंगे। यहां तो जो भी आत्मीय है सब आपस मे ब्रदर्स है। उनका सबका जरूर बाप होगा। कहते भी है कि हम सब भाई-2 है। सबके लिये ही कहते है। जो भी आवेंगे उनको ही कहेंगे कि हम सब भाई-2 है। फिर उनमे भी जो शास्त्र आद पढ़े हुये हैवो भी समझते है कि हम भाई-2 है। ड्रामा मे तो सब बन्धे हुये है जिनको कोई नही जानता है। यह नां जाननाभी ड्रामा में नूंध है। जो तो बाप ही आकर सुनाते है। कथायें आद जब बैठ कर सुनाते है तो कहते है परमपिता परमात्माये नमः। अब वो कौन है वो जानते नही है। कहते है ब्र, देवता विष्णु देवता शंकर देवता। परन्तु समझ से नही कहते है। ब्रहमा को वास्तव मे देवता नही कहेंगे। देवता विष्णु को कहा जाता है। क्योकि विष्णु की तो है रुद्र माला। ब्रहमा को देवता नही कहेंगे। ब्रहमा को भी ब्राहमण ही कहेंगे नां कि देवता। ब्रहमा का ही किसीको भी पता नही है। विष्णु देवता कहना ठीक है। शंकर का तो कुछ भी पार्ट नही है। उनकी बायोग्राफी नहीं शिव बाबा की तो है। वो तो आते ही है पतितो को पावन बनाने। नई दुनियां की स्थापना करने। कहा ही जाता है अशान्तिः धाम। शरीर तो सभी के विनाश होने ही है। नई दुनियां मे तो होंगे ही सिर्फ तुम। जो भी मुख्य धर्म है उनको तुम जानते हो। सभी के तो नाम ले नही सकेंगे। टास्टारियां छोटी-2 तो बहुत ही है। पहले-2 तो है डिटीजम फिर ईसलाईजम यह बाते सिवाय तुम बच्चे के और कोई की बुधी मे नही है। अभी वो ही आदी सनातन देवता धर्म प्रायः लोप हुआ है। इस लिये ही बनयनट्री का मिसाल देते है। सारा झाड तो खडा हुआ है बाकी फाउंडेशन है ही नही। सबसे बडी आयु तो बनयनट्री की ही होती है। तो इसमे से सबसे बडी आयु है दे, देवधर्म की। वो जब प्रायः लोप हो जाता है तब तो बाप आकर कहते है कि अब एक धर्म की स्थापना अनेक धर्मों का विनाश होता है। इसलिये ही त्रिमूर्ती भी बनाया है। परन्तु अंध नही समझते है। तुम बच्चे ही जानते हो कि ऊंच ते ऊंच भगवान है। फिर ब्र, वि, शं, फिर साकार दुनियां पर आते है तो देवी देवता धर्म के सिवाय और कोई धर्म है नही। यह तो समझ की बात है नां। भक्ति मार्ग की भी ड्रामा मे नूंध है। पहले-2 शिव की पुजा करते है। फिर देवताओं की करते है। भक्ति की ही तो सारी बात है। बाकी तो समझ जाते है कि हमारा धर्म मंठ पंथकब स्थापन होता है। सतयुग मे तो है ही देवी देवता धर्म। इसका दुसरा कोई भी नाम नही है। जैसे आर्य लोग कहते है कि हम बहुत पुराने है। वास्तव मे तो सबसे पुराना है ही आः सः देः देः धर्म। जिसको ही देवी राजधानी कहा जाता है। तुम जब झाड पर समझाते हो तो खुद भी समझ लेंगे कि हमारा धर्म फलाने समय पर आवेगा। अब जो आनादी अविनाशी पार्ट मिला हुआ है वो बजाना है। इसमे कोई का दोष वा भूल नही कहा जाता है। यह तो सिर्फ समझाया जाता है कि पापात्मा क्यो बने हो। मनुष्य कहेंगे कि हम तो बेहद के बाप के बच्चे है ब्रदर्स है। तो सतयुग मे क्यो नही है? परन्तु ड्रामा मे पार्ट ही नही है। यह अनादी ड्रामा बना हुआ है। इसमे ही निश्चय रखो। और कोई भी बात बोलो नही। चक्र भी दिखाया है कि कैसे यह फिरता है। कल्प वृक्ष का भी चित्र है परन्तु यह कोई भी जानते नही है कि इसकी आयु कितनी है। बाप कोई क की निन्दा नही करते है। यह तो समझाया जाता है। तुमको भी समझाते है कि तुम कितने पावन थे। अभी पतित बने हो तो पुकारते हो कि हे पतित पावन आओ। पहले तो सबको पावन बनना है। फिर नम्बरवार पार्ट बजाने आना है। आत्मीय तो सभी ऊपर मे रहती है। बाप भी है ऊपर। परन्तु ऐसे ही वो बुलाने से आते नही है। बाप कहते है कि मेरा भी ड्रामा मे पार्ट नूंधा हुआ है। जैसे हद के ड्रामा मे भी मुख्य-2 एक्टर्स का पार्ट होता है नां। यह तो है फिर बेहद का ड्रामा। तुम सभी ड्रामा के बन्धन मे बन्धे हुये हो। इसका मतलब यह नही है कि धागे मे बन्धे हुये हो। नही। यह तो बाप समझाते है कि वो तो है जड़ झाड बीज अगर चेतन होता तो उनको भी पता होता कि कैसे यह झाड बडा होगा फिर कैसे फल देगा। यह तो जड़ बीज है। इस मनुष्य रूपी झाड का। इसको ही उल्टा झाड कहा जाता है। बाप तो है नालेजफुल।

उनको तो सारे झाड़ के आः मः अः की नालेज है। कहते है किमै अब एक ही बार आकर सारे झाड की नालेज देता हूं। यह है वो ही गीता की नालेज। कोई नई बात नही है। भक्ति मार्ग के लिये तो कितने ढेर शास्त्र बनाये है। कहते है कि व्यास भगवान ने बनसये है। अब भगवान तो मनुष्य हो नही सकता। बाकी वो तो निमत बना है इन शास्त्रो को बनाने का। यह फिर भी बनेंगे। जैसे ग्रन्थ अभी छापे का बना हुआ है। पहले तो कोई ने हाथ अक्षरो से बनाया होगा। शुरु मे तो छापा नही था। गीता भ पहले तो हाथ अक्षरो की ही थी। यहां पर बाबा तो कोई श्लोक आद नही उचारते है। वो लोग तो ग्रन्थ पढ़ कर फिर अर्थ करके देते है। बाप बैठ समझाते है कि यह है पढ़ाई। इसमे तो श्लोक आद की दरकार ही नही। उन शास्त्रो की पढ़ाई मे ऐः आः नहीहै। ग्रन्थ पढ़ कर फिर क्या बनेंगे ? कुछ भी नही। वो है भक्ति का शास्त्र। यह तो पाठशाला है भगवान आकर पढ़ाते है। ज्ञान का सागर है नां तो यह ज्ञान है बिलकुल ही नया। दुनियां मे कोई को नहीहै। कहते भी है कि ज्ञान भक्ति और वैराग। इस पुरानी दुनियां से वैराग चाहिये। बाप आकर बेहद की दुनियां का वैराग कराते है। क्योंकि यह पुरानी दुनियां विनाश होनी है। सन्यासियों का तो है हद का वैराग। हमाराहै बेहद का वैराग। वोतो जब शंकराचार्य आद आता है तब ही बैठ कर सिखाते है। घर-बार छोडने का। वो भी शुरु मे नही सिखाते है। जब बहुत वृधी हो जाती है तबही शुरु करते है। पहले तो धर्म स्थापन करने वाला एक ही होता है। फिर धीरे-2 वृधी को पाता है। यह भी समझाना है कि दुनियां मे पहले-2 कौनया धर्म था। आदी सनतन देवता धर्म ही था जिसको स्वर्ग हेवन भी कहते है। तुम रचता और रचना को जानने से आस्तिक हो जाते हो। नास्तिक पने मे कितना दुःख होता है। निधणके बन जाते है। आपस मे ही लड़ते रहते है। कहते है नां कि तुम आपस मे ही लड़ पड़ते हो कोईधणी-धोणी नही है? इस समय तो सभी निधणके है क्योंकि बेहद के बाप तो जानते ही नही है। बाप आकर सब को धणिका आस्तिक बना देते है। देवतोय कब आपस मे लडते झगड़ते नही है। वहां पर नई दुनियां मे तो पवित्रता सुख शान्तिः सब था। अपार सुख था। यहां तो अपार अपार दुःख है। वो है सतयुग। यह है कलयुग। अब तुम्हारा है पुरुषोत्तम संगम युग। पुरुषोत्तम युग एक ही होता है। सतयुग और त्रेता के संगम को पुरुषोत्तम संगम युग नही नही कहेंगे। वहां तो कुछ भी नही होता है। पुरुषोत्तम संगम युग है तो एक ही। जबकि तुम पुरुषोत्तम बनते हो। यहां है असुर वहां है देवतायें। यह भी अभीतुम समझते हो। दुनियां तो बिलकुल ही बेसमझ है। तुम ही जानते हो कि यह रावण का राज्य है। रावण के ऊपर गधे का शीश उिखाते है। गधे को कितना भी साफ कर साफ कपड़ उस पर रखेंगेवो फिर भी मिटी मे लेट कर कपडे खराब कर देगा। तुम्हारे भी कपडे अब बाप बाप साफ कर गुल-2 बनाते है फिर रावण राज्य मे अपिवत्र बन कर तुम सब खराब कर देते हो। फिर आत्मा और शरीर दोनो ही खराब हो जाते है। गधे को कोई अक्ल थोडेई होती है। बाप भी कहते है कि तुम मिस्ल तुच्छ बुधी हो पडे हो। मायाने सारा श्रंगार गंवा दिया है। मनुष्य सभी गधे मिस्ल बन गये है। बाप को पतित पावन कहते है नां। तुम तो भरी सभा मे कह सकते हो कि हम गोल्डन ऐज में कितने श्रंगारे हुये थे। कितना फर्स्ट क्लास राज-भाग था। फिर माया रुपी घूड मे लिपट कर गन्दे हो गये है। शास्त्र आद जो पढ़ते है वो तो हींग ही मारते रहते है। मेढ़को मिस्ल टर्र-टर्र करते रहते है अर्थ कुछ भी नही समझते है। कहते है अच्युतम केशवम् ... श्री राम नारायणाय अब राम कहां का नारायण कहां का। जो कुछ भी कहते है अर्थ कुछ भी नही समझते है। अब तुम समझते हो कि कहां की बात कहां पर ले गये है। भक्ति मार्ग के शास्त्र सब ऐसे ही बनाये है। बाप कहते है कि यह तो है अन्धेरी नगरी .... भगवान को सर्वव्यापी कह देते है। टके सेर खाजा .... बाप समझाते है कि जो कुछ भी हुआ है सो फिर भी रेक्यूरेट होगा। इसमे मूंझने की बिलकुल ही दरकार नही है। हिसाबहै नां। बाबा ने समझाया था नां कि 5000 साल मे दिन कितने मिन्ट कितने है। तो एक बच्चे ने सब धर्म वालो का भी हिसाब निकाल कर भेजा है। इसमे भी बुधी वेस्ट की होगी। बाबा तो ऐसे ही समझाते है कि यह दुनियां

कैसे चलती है। बाकी आठ वर्ष है। फिर सात फिर छे हो जावेंगे। तुम बच्चे समझते हो कि फलाने धर्म की स्थापना होती है। फिर इतना समय चलता है। प्रजापिता ब्रह्मा वो तो है ग्रेट-2 ग्रैंड फादर। उनका आक्यूपेशन कोई नही जानते है। विराट रूप बनाया है तो प्रजापिता ब्रह्मा को भी उडा दिया है। शिव बाबा को भी उडा दिया है। बाप और ब्राहम्णों को यर्थाथ रीती जानते नही है। उनको कहते भी है आदी देव। बाप बैठ समझाते है कि मै इस झाड का चैतन बीज रूप हूं। यह उल्टा झाड है। बाप जो सत है चैतन है ज्ञान का सागर है आन्नद का सागर है। उनकी ही महिमा की जाती है। आत्मा चैतन है नां। आत्मा नां हो तो चल फिर भी नही सके। गर्भ मे भी पांच छेमास बाद आत्मा प्रवेश करती है तब ही चुस्पुर होती है। यह भी ड्रामा बना हुआ है। आत्मा प्रवेश करती है। फिर आत्मा निकल जाती है तो खलास। शरीर को जला देते है। कोई भी काम का नही रहता है। आत्मा अविनाशी है वो पार्ट बजाती है। पहले-2 तो आत्मा का ज्ञान चाहिये। परन्तु दे कौन? आत्मा क्या चीज है कौन बतावे? रियेलाईज कराने वाला तो कोई दुसरा ही चाहिये। बाप आकर रियेलाईज कराते है। पहले तो जानते थे क्या कि आत्मा इतनी छोटी बिन्दी है। आत्मा का तो ज्ञान ही अभी आया है कि आत्मा ही पार्ट बजाती है। उसमे ही अविनाशी पार्ट भरा हुआ है। परमपिता भी तो आत्मा ही है नां। उनको ही ज्ञान का सागर कहा जाता है। वो ही आकर आत्मा को रियेलाईजेशन कराते है। आत्मा आत्मा को रियेलाईजेशन नही करा सकती है। आत्मा क्या है यह बाप के बिना कोई नही जानते है। वो तो सिर्फ कह देते है कि परमात्मा सर्वशक्तिवान, हजारो ही सूर्यो से तेज है। परन्तु समझते कुछ भी नही है। बाप कहते है कि यह तो भक्ति मार्ग मे वर्णन किया हुआ है। और शास्त्रो मे लिख दिया है कि अर्जुन को सा० हुआ। तो कहा कि मै इतना तेज सहन नही कर सकता हूं। तो वो ही बात मनुष्यों की बुधी मे बैठी हुई है। वो किसीके अन्दर प्रवेश करे तो फ्र फट जावे। तो ज्ञान तो नही है नां तो समझते है कि परमात्मा तो हजारो सूर्यो से भी तेज है। हमको तो इसका सा० चाहिये। भक्ति की ही भावना से बैठते है तो उनको सा० भी होता है। शुरू मे तुम्हारे पास भी बहुत देखते थे तो आखे लाल हो जाती थी, सा० किया फिर आत्मा वो कहां है? वो तो सब है भक्ति मार्ग। अब यह है ज्ञान मार्ग। तो यह बाप समझाते है। इसमे कोई की ग्लानी की बात नही है। बच्चो को सदैव हर्षित रहना चाहिये। यह तो ड्रामा बना हुआ है। मुझे तो इतनी गाली देते है तो मै क्या करता हूं। कहते है कि भगवान तो कुत्ते बिल्ले मे है सर्वव्यापी है। फिर मुझे गुस्सा आता है क्या? समझता हूं कि ड्रामा अनुसार यह सब भक्ति मार्ग में फंसे हुये है। नाराज होने की बात ही नही है। ड्रामा ऐसा बना हुआ है। प्यार से समझानी देनी होती है। बिचारे अज्ञान अन्धेरे मे पडे है। नां समझते है तो तरस भी पड़ता है। सदैव मुस्कुराते रहना चाहिये। यह बिचारे स्वर्ग के दवार पर तो आ ही नही सकेंगे। यह सभी तो शान्तिधाम मे जाने वाले है। सब चाहते भी शान्ति ही है। तो बाप ही रियल बाते समझाते है। अब तुम समझते हो कि यह कैसे खेल बना हुआ है। ड्रामा मे हर एक को पार्ट मिला हुआ है। इसमे तो बहुत ही अचल स्थाई बुधी चाहिये। ड्रामा अनुसार ही बाप को गाली दे रहे है। ऐसी अवस्था चाहिये। जब तक अवस्था नही तो पुरुषार्थ भी फिर कैसा। अवस्था पहले तो अडोल चाहिये। कुछ भी हो भल तूफान आवे मगर स्थाई रहना है। माया के तूफान तो ढेर ही आवेंगे। पिछाडी तक आवेंगे पिछाडी तक ही आवेंगे। अवस्था मजबूत चाहिये। कई बच्चे तो पुरुषार्थ करते तूफान को उडाते रहते है। जितना जो पास होगा उतना ही ऊंच पद पावेगा राजधानी मे पद तो होते ही है नां। सबसे अच्छे चित्र तो त्रिमूर्ती गोला और झाड है। शुरू-2 का बना हुआ है। विलायत मे सर्विस के लिये भी यही दो चित्र ले जाने है। इन्ही पर तो वो अच्छी रीती समझ सकेंगे। फिर तो जो गीतायें आदि बेचने ठगी करने जाते है उनको भी कहेंगे कि यह क्या? यह तो तुम झूठी बाते सुनाते हो। धीरे-2 बाबा जो चाहते है कपडे पर चित्र वो बनाते रहेंगे। उनको जाकर समझाओ कि तुम अपने ही क्रियश्चन धर्म मे ही ऊंच पद पाना चाहते हो तो यह आकर समझो। गुडमार्निंग